ISSN:2583-8849



डॉ. सरस्वती जोशी
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट, उदयपुर (राज.)

सुंदर जिसका रूप निराला,
गोकुल का वो नटखट ग्वाला ।
भादव की आठम को आया,
खूब संग में पानी लाया ।

नाम जपूँ बस एक तुम्हारा,
मिलता मुझको जहाँ सहारा ।
न संकट न हो कोई पीड़ा,
आप उठाना मेरा बीड़ा ।

मग में हो जो कोई बाधा,
हर लेना तुम बनकर राधा ।
कान्हा बनकर तुझको भाऊँ,
जनम जनम में साथ निभाऊँ ।

वाणी की देवी के आगे,
जोड़ूँ नित सरगम के धागे ।
अर्चन के कुछ द्रव्य सजा लूँ,
शब्द-शब्द संगीत बना लूँ ।

आशीष मिले तेरा माता,
महिमा तेरी निसदिन गाता ।
इतनी श्रद्धा मुझमें आए,
बाधा कोई रोक न पाए ।

गुरूवर को नित पहले पूजा,
याद न आया कोई दूजा ।
गुरु का वंदन करके जाना,
सच्चा गुरु है ईश समाना ।

बातें जिसकी मन को भाती,
गले लगाती, लाड़ लड़ाती ।
बिटिया घर की रौनक होती,
खुशियों की वो क्यारी बोती ।

हिन्दी ने ही मान दिलाया,
ज्ञान घुला पीयूष पिलाया ।
इस रस को पीते ही भाई,
चेतनता बुद्धि में आई ।

हिन्दी को जो समझे माता,
पुत्र श्रवण सा आदर पाता ।
ऋण जो चाहो आप चुकाना,
हिन्दी भाषा को अपनाना।